मेरा पसन्दीदा चित्र

डांसिंग एट दी लुव्र

शेफाली जैन

फेथ, लियोनार्दो द विंची की मोनालिसा को ढूँढने में इधर-उधर दौड़ लगा रही थी। बच्चे म्यूज़ियम के बाहर खड़े आइसक्रीम वाले से आइसक्रीम खरीदने की ज़िद कर रहे थे।

फेथ की माँ शर्म से मुँह छुपाना चाहती थी क्योंकि बच्चों की हरकतों को देख, उनके पीछे अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई थी।

"डांसिंग एट दी लुव्र" मेरी पसन्दीदा पेंटिंग्स में से एक है। इसे एक अफ्रीकी-अमरीकी चित्रकार फेथ रिंगोल्ड ने रचा है। इसका टाइटल देखो कितना मज़ेदार है – "डांसिंग एट दी लुव्र"। यानी "लुव्र में नाचना"। लुव्र पेरिस का सबसे बड़ा म्यूज़ियम है। यहाँ दुनिया भर के अनेक महान कलाकारों की कलाकृतियाँ रखी हैं। तुम किसी आर्ट गैलरी में गए होगे तो ज़रूर मालूम होगा कि वहाँ पर नाचना तो दूर, ऊँची आवाज़ में बोलना भी खतरे से खाली नहीं लगता। जिसे देखो वह गम्भीर-सा चेहरा लिए, हाथ पीठ पीछे बाँधे, नाक पेंटिंग में घुसाए खड़ा मालूम होता है – जैसे, कोई डॉक्टर किसी मरीज़ की जाँच कर रहा हो। ऐसे में अगर तीन बच्चे और उनकी माँ और दादी वहाँ नाचने लगें तो है ना मज़े की बात?

इस पेंटिंग के पीछे एक कहानी है।

फेथ का कहना है कि जब वह अपनी बेटियों व माँ को लुव्र दिखाने ले गई थी, तब ऐसा ही कुछ हुआ था। हालाँकि वे लोग वहाँ नाचे तो नहीं थे लेकिन मस्ती खूब की थी। फेथ, महान इटालियन चित्रकार लियोनार्दो द विंची की जानी-मानी पेंटिंग "मोनालिसा" को ढूँढने म्यूज़ियम में इधर-उधर दौड़ लगा रही थीं। बच्चे म्यूज़ियम के बाहर खड़े आइसक्रीम वाले से आइसक्रीम खरीदने की ज़िद कर रहे थे। और फेथ की माँ शर्म से मुँह छुपाना चाहती थी क्योंकि बच्चों की हरकतों को देख, इनके पीछे अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई थी।

अब अगर तुम इस पेंटिंग को गौर से देखोगे तो पाओगे कि इसमें तीन और पेंटिंग्स हैं। विंची की "मोनालिसा" (जिस फेथ ढूँढ रही थी) चित्र के ठीक बीच में है। उसके दाईं तरफ "द वरजिन ऑफ द रॉक्स", और बाईं ओर "द वरजिन एंड चाइल्ड विद सेंट एन" है। पर, ये सब इन पेंटिंग्स के सामने नाच क्यों रहे हैं? फेथ कहती हैं कि जिस तरह इटली की संस्कृति की शान है उसकी चित्रकला (खासकर विंची की) उसी तरह उनकी अफ्रीकी संस्कृति की पहचान नृत्य है। अश्वेतों की रग-रग में नाच बसा है। उनका बच्चा-बच्चा नाचने का मज़ा लूटता है और

इस कला में माहिर होता है। फेथ मानती हैं कि हम जिस चीज़ में माहिर हैं, जो हमारी पहचान है, उसे दर्शाने में हमें गर्व महसूस करना चाहिए। चाहे हम किसी भी देश में क्यों न चले जाएँ, हमें अपनी संस्कृति को अपनाने का, उसके ज़रिए खुद को व्यक्त करने का हक होना चाहिए। फेथ, यहाँ पर, अमरीका में हो रहे जातीय विभेद के खिलाफ अपने विचार व्यक्त कर रही हैं। लूव्र में नाच कर वे अश्वेतों के अपने अस्तित्व को दर्शाना चाहती हैं। बड़ी हिम्मत का काम है ना? और कितना अनोखा और कामयाब तरीका भी है!

एक और बात! इस पेंटिंग में फेथ केवल माँ और बच्चों को दर्शाती हैं। इसमें कोई आदमी नहीं। पेंटिंग के अन्दर वाली तीनों पेंटिंग्स में भी कोई आदमी नहीं। फेथ कहती हैं कि एक चित्रकार को पूरी आज़ादी है कि वह जिन्हें चाहे चित्रित करे – बच्चे, औरतें, जानवर, फल-फूल।

हम जिस चीज़ में माहिर हैं, जो हमारी पहचान है, उसे दर्शाने में हमें गर्व महसूस करना चाहिए। चाहे हम किसी भी देश में क्यों न चले जाएँ।

फेथ के चित्रों में अक्सर औरतें ही होती हैं। उनकी परिचित औरतें जिन्होंने उनकी परवरिश में कोई न कोई भूमिका निभाई हो। ऐसा करके फेथ उनका शुक्रिया अदा करना चाहती हैं। "पिकनिक एट जीवनी" में उनकी ऐसी ही कई सहेलियाँ हैं। फेथ पेंटिंग के माध्यम से अपने सबसे नज़दीकी लोगों और रिश्तेदारों – माँ, दादी, सबसे करीबी दोस्तों, का शुक्रिया अदा करती हैं।

फेथ अपने चित्र कैनवास पर एक्रिलिक से बनाती हैं। फिर अक्सर इन पेंटिंग्स की बॉर्डर कपड़ों को जोड़-जोड़कर बनाती हैं। वे पेंट के साथ स्केचपेन, सुई-धागा, कपड़े की चिन्दियाँ आदि का भी उपयोग करती हैं। उनकी माँ एक फैशन डिज़ाइनर हैं। सिलाई का काम फेथ ने उन्हीं से सीखा। फेथ मानती हैं कि जैसे चित्रकला में विषय पर कोई पाबन्दी नहीं होनी चाहिए, वैसे ही माध्यम पर भी पूरी छूट होनी चाहिए।

फेथ ने बच्चों के लिए कहानियाँ भी लिखी हैं और उनके चित्र भी बनाए हैं। वेबसाइट www.faithringgold.com पर इन्हें तलाश सकते हो। इस वेबसाइट पर इनकी अन्य पेंटिंग्स भी देखने को मिलेंगी। फेथ को तुम अपने सवाल या विचार ई-मेल द्वारा भेज सकते हो।